

## संध्या महत्व

जयप्रकाश शर्मा

पाण्डुलिपि एवं लिपि विशेषज्ञ  
उपनिदेशक -पद्मश्री नारायणदास रामानन्द दर्शन अध्ययन एवं  
पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर  
विजिटिंग असिस्टेंट प्रोफेसर (मैन्युस्क्रिप्ट सब्जेक्ट रिसर्च )  
अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर

संध्या शब्द की निष्पत्ति व्याकरण रीति से इस प्रकार होती है "सम्यग् ध्यायन्त्यस्यां सा संध्या" इसका अर्थ होता है "जिसमें परब्रह्म परमात्मा का सम्यक् प्रकार से ध्यान किया जाये" उसे संध्या कहते हैं।

पूज्यपाद महर्षि जैमिनी ने

जाते ब्रह्मोपदेशे तु कर्म संध्यादिकं चरेत् ।

अर्थ - ब्रह्म अर्थात् वेद का उपदेश होने पर संध्या आदिक कर्म करना चाहिये-ऐसी आज्ञा दी है। जिससे वेदाध्ययन के साथ ही संध्योपासन करना निश्चित होता है।

संध्या का स्वरूप श्रुति में इस प्रकार कहा है:-

" रक्षांसि ह वा पुरोनुवाके तपोग्रं प्रतिष्ठन्त तान्प्रजापतिवरीणोपामन्त्रयत । तानि वरमवृणीताऽदित्यो नो योद्धा, इति तान् प्रजापतिरब्रवीद्योधयध्वमिति । तस्मादुत्तिष्ठन्तं ह वा तानि रक्षांस्यादित्यं योधयन्ति यावदस्तमन्वगात्तानि ह वा एतानि रक्षांसि गायत्रियाऽभिमन्त्रितेनाम्भसा शाम्यन्ति तदुह वा एते ब्रह्मवादिनः पूर्वाभिमुखाः संध्यायां गायत्रियाऽभिमन्त्रिता आप ऊर्ध्वं विक्षिपन्ति ता एता आपो वज्रीभूत्वा तानि रक्षांसि मन्देहारुणे द्वीपे प्राक्षिपन्ति यत्प्रदक्षिणां प्रक्रमन्ति तेन पाप्मानमवधून्वन्त्युद्यन्तमस्तं यन्तमादित्यमधिध्यायन् कुर्वन् ब्राह्मणो विद्वान् सकलं भद्रमश्नुतेऽसावादित्यो ब्रह्मैति ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येति य एवं वेदः ।

अर्थ - पूर्व समय में राक्षसों ने अनुवाकों से अत्युग्र तप किया। तब प्रजापति (ब्रह्मा) ने उनको वर मांगने को कहा। उन राक्षसों ने यह वर मांगा कि आदित्य (सूर्य) हम से युद्ध करनेवाला हो। उनको प्रजापति ने कहा युद्ध

करो । इसलिये उदय होते सूर्य से वे राक्षस जब तक वह अस्त नहीं होता युद्ध करते हैं। वे राक्षस गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल से शान्त होते हैं ( मरते हैं )। वेद के जानेवाले ब्राह्मण पूर्व दिशा की ओर मुखकर (प्रातः-काल में) संध्या समय में गायत्री मंत्र से मंत्रित जल को ऊपर फेंकते हैं । वह जल वज्ररूप होकर उन राक्षसों को मन्देहारूण नाम के द्वीप में फेंक देता है। जो प्रदक्षिणा करते हैं जिससे पाप को दूर करते हैं। जो उदय होते हुए और अस्त होते हुए सूर्य का ध्यान करता है वह ब्राह्मण विद्वान् सर्व प्रकार के कल्याण को प्राप्त होता है। यह सूर्य है वही ब्रह्म है। वह पुरुष ब्रह्म होकर ब्रह्म में ही मिल जाता है।

पूज्यपाद महर्षि पराशर ने संध्या का लक्षण यह कहा है।

अहोरात्रस्य यः संधिः सूर्यनक्षत्रवर्जितः ।  
सा तु संध्या समाख्याता मुनिभिस्तत्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-सूर्य और नक्षत्र (तारा) से रहित दिन और रात के मिलने के समय को तच्च के जानेवाले मुनि लोग संध्या कहते हैं। पूज्यपाद कृष्ण द्वैपायन व्यास ने संध्या का स्वरूप इस प्रकार कहा है:-

उपास्ते संधिवेलायां निशाया दिवसस्य च ।  
तामेव संध्यां तस्मात्तप्रवदन्ति मनीषिणः ॥

अर्थ - रात्रि और दिन की संधि की बेला जो उपासना की जाती है उसी को बुद्धिमान् लोक संध्या कहते हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य संध्या का इस प्रकार वर्णन करते हैं:-

संधौ संध्यामुपासीत नास्तमे नोद्रते रवौ ।

अर्थ - जब सूर्य न तो उदय हुआ हो और न अस्त हुआ हो उस संधि समय में संध्या की उपासना करनी चाहिये। संध्या दिन में तीन काल (प्रातः, मध्याह्न तथा सायं) में की जाती है।

संध्या त्रैकालिकी कार्या वैदिकी तान्त्रिकी क्रमात् ।  
उपासनाया भेदेन पूजां कुर्याद्यथाविधिः ॥

ब्रह्मन्त्रोपासकानां गायत्री जपनात्प्रिये ! ।  
ज्ञानाद्ब्रह्मेति तद्वाच्यं संध्या भवति वैदिकी ॥

अन्येषां वैदिकी संध्या सूर्योपस्थानपूर्वकम् ।

अर्धदानं दिनेशाय गायत्रीजपनं तथा ।  
अष्टोत्तरसहस्रं वा शतं वा दशधापि वा ।  
जपानां नियमो भद्रे ! सर्वत्राह्लिककर्मणि ॥

शूद्रसामान्यजातीनामधिकारोऽस्ति केवलम् ।  
आगमोक्तविधौ देवि ! सर्वसिद्धिस्ततो भवेत् ॥

प्रातः सूर्योदयः कालो मध्याह्नस्तदनन्तरम् ।  
सायं सूर्यास्तसमयस्थिकालानामयं क्रमः ॥ [ महानिर्वाण तन्त्र ]

**अर्थ -** संध्या तीन काल में करनी चाहिये। वह संध्या दो प्रकार की है, एक वैदिकी और दूसरी तांत्रिकी। उसकी उपासना के भेद से विधि पूर्वक पूजा करनी चाहिये। ब्रह्म मंत्र (ओंकार) के उपासक गायत्री का जप करते हैं और ब्रह्म की उपासना जिससे करते हैं वह वैदिकी संध्या कहलाती है। अन्य ग्रहस्थियों के लिये वैदिकी संध्या वह है जिसमें सूर्य का उपस्थान, सूर्य को अर्धदान तथा गायत्री जप हो। नित्य कर्म में गायत्री जप १००८ या १०८ या १० बार करने का सर्वत्र नियम है। शूद्र व सामान्य जाति के लिये तंत्रोक्त संध्या कही गई है जिससे सर्वसिद्धि होती है। सूर्य के उदय के समय को प्रातः, उसके पश्चात् मध्याह्न और सूर्य के अस्त समय को सायं कहते हैं इसप्रकार संध्या के तीन कालों का क्रम कहा गया है।

संध्योपासन का क्रम संवर्त ऋषि ने इस प्रकार कहा है:-

प्रातः संध्यां सनक्षत्रामुपासीत यथाविधिः ।  
सादित्यां पश्चिमां संध्यामर्द्धास्त मितभास्कराम् ॥  
गायत्रीमध्यसेत्तावद्यावदादित्यदर्शनम् ।

**अर्थ -** प्रातः संध्या में जब नक्षत्र (तारे) दिखलाई देते हों तब बैठो। जब तक सूर्य का उदय हो तब तक गायत्री का जप करता रहे और सायं संध्या में जब सूर्य आधा अस्त हो गया हो तब बैठे और नक्षत्र (तारे) दिखने लगे तब तक गायत्री का जप करना चाहिये।

मनुस्मृति में यह विषय स्पष्ट कर दिया गया है -

पूर्वा संध्यां जपस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात् ।  
पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ॥

**अर्थ -** प्रातःकाल की संध्या में सावित्री को जपता हुआ सूर्य के उदय पर्यंत स्थित रहे, वैसे ही सायंकाल की संध्या में सावित्री को जपता हुआ नक्षत्रों के भलीभांति लक्षित होने तक स्थित रहे।

यही विषय अन्यत्र अन्य रीति से लिखा मिलता है:-

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्तारका ।  
कनिष्ठा सूर्यसहिता प्रातःसंध्या त्रिधा स्मृता ॥

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तारका ।  
कनिष्ठा तारकोपेता सायंसंध्या त्रिधा स्मृता ॥

**अर्थ -** प्रातःसंध्या के तीन भेद कहे हैं- उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ। तारों के साथ वाली उत्तम, तारे न दिखते हों वह मध्यम और सूर्य उदय हो गया हो वह कनिष्ठ। इसी प्रकार सायं संध्या के भी तीन भेद हैं- सूर्य के साथवाली उत्तम, तारे न दिखें वह मध्यम और तारे उग जावे वह कनिष्ठ। मध्याह्न संध्या का समय दिन का अष्टम मुहूर्त उत्तम काल बताया गया है।

पूर्वापरे तथा संध्ये सनक्षत्रे प्रकीर्तिते ।  
समसूर्येऽपि मध्याह्ने मुहूर्तः सप्तमोपरि ॥

**अर्थ -** प्रातः और सायं संध्या दोनों नक्षत्रों के साथ कही गई हैं और मध्याह्न संध्या जब सूर्य दिन का बराबर आधा भाग चला जाय तब करनी चाहिये अर्थात् सूर्य ठीक सिर पर आ जाय या सूर्योदय से सात मुहूर्त से ऊपर समय चला जाय वह मध्याह्न संध्या का समय कहा गया है। सन्ध्या के ही तीन नाम गायत्री, सावित्री और सरस्वती हैं।

भगवान् वेदव्यास कहते हैं कि:-

गायत्री नाम पूर्वाङ्के सावित्री मध्यमे दिने ।  
सरस्वती च सायाह्ने सैव संध्या त्रिषु स्मृता ॥

एतत्संध्यात्रयं प्रोक्तं ब्रह्मण्यं यदधिष्ठितम् ।  
यस्य नास्त्यादरस्तत्र न स ब्राह्मण उच्यते ॥

**अर्थ -** प्रातःकाल में गायत्री, मध्याह्न समय में सावित्री और सायंकाल में सरस्वती ये तीनों नाम सन्ध्या

की अधिष्ठात्री देवताओं के हैं। इन्हीं को तीन सन्ध्या कहते हैं जिनके करने से ब्राह्मणपन रहता है। जिस पुरुष का सन्ध्या में आदर नहीं है अर्थात् जो त्रिकाल सन्ध्योपासन नहीं करता है यह ब्राह्मण नहीं है ॥

**प्रातः संध्या के करने से रात्रिकृत पाप का नाश और सायं संध्या के करने से दिन कृत पाप का नाश होता है।**

**पूर्वा संध्यां जपस्तिष्ठनैशमेनो व्यपोहति ।  
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम् ॥[मनुस्मृति]**

**अर्थ -** प्रातःकाल की संध्या में स्थित जप करता हुआ रात्रि के पाप को दूर करता है और सायंकाल की संध्या में स्थित जप करता हुआ दिन में किये हुए पाप को दूर करता है।

संध्या नहीं करनेवाला किसी भी पुण्य कर्म करने के योग्य नहीं रहता है।

**संध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।**

**अर्थ-** जो संध्या नहीं करता है वह अपवित्र मनुष्य सर्वप्रकार के कर्म करने के योग्य नहीं होता है।

भगवान् मनु तो यहां तक आज्ञा देते हैं कि संध्योपासन न करनेवाले को शूद्र तुल्य समझना चाहिये:-

**न तिष्ठति तु यः पूर्वा नोपास्ते यश्च पश्चिमाम् ।  
स शूद्रवद्विष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥**

**अर्थ-**जो पूर्वा अर्थात् प्रातःकाल की संध्या नहीं करता और पिछली अर्थात् सायंकाल को संध्या की उपासना नहीं करता वह शूद्र के समान सब ब्राह्मण के कर्म और अतिथि सत्कार से बाहर करने लायक है।

इससे स्पष्टतया सिद्ध होता है कि संध्योपासन नित्य करना चाहिये। संध्या न करने से ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं रहता अर्थात् वह अब्राह्मण हो जाता है। महणि शतातप के मत से अब्राह्मण छः प्रकार का होता है। यथा:-

**अब्राह्मणास्तु षट् प्रोक्ता क्रषिणा तत्ववादिना ।  
आद्यो राजभृतेस्तेषां द्वितीयः क्रयविक्रयः ॥**

**तृतीयो बहुयाज्यः स्याच्चतुर्थो ग्रामयाजकः ।  
पञ्चमस्तु भृतस्तेषां ग्रामस्य नगरस्य च ।**

अनादित्यां तु यः पूर्वा सादित्यां चैव पश्चिमाम् ।  
नोपासीत द्विजः संध्यां स षष्ठोऽब्राह्मणः स्मृतः ॥

अर्थ-तत्व के जानने वाले ऋषि ने छः प्रकार के अब्राह्मण कहे हैं। पहला राज की नौकरी करनेवाला, दूसरा खरीदने व बेचनेवाला, तीसरा बहुत यज्ञ करानेवाला, चौथा गांव में यज्ञ करानेवाला, पांचवां इनका नौकर और छठा यह जो प्रातःकाल में सूर्य से पहले और सायंकाल में सूर्यसहित समय में संध्या न करने-वाला ब्राह्मण। अतः संध्या न करनेवाला ब्राह्मण केवल नाम मात्र ब्राह्मण होता है।

संध्या न करने का समय भी बताया जाता है। घर में बालक पैदा होने से जो आशौच होता है वह जननाशौच और मृत्यु होने से जो सूतक होता है वह मरणाशौच कहा जाता है। इन दोनों प्रकार के आशौच में संध्या दश दिन तक करने का निषेध है, यथा:-

संध्यां पञ्चमहायज्ञं नैत्यकं स्मृतिकर्म च ।  
तन्मध्ये ह्रापयेत्तेषां दशाहान्ते पुनः क्रियाम् ॥

अर्थ-संध्या, पञ्च महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ), नित्यकर्म तथा स्मार्तकर्म आशौच समय में छोड़ देने चाहिये और दश दिनों के बाद फिर करने चाहिये।

सायं सन्ध्या का निषेध भी किसी किसी समय में कहा गया है, यथा:-

संक्रान्तौ पक्षयोरन्ते द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।  
सायं संध्यां न कुर्वीत कृते च पितृहा भवेत् ॥

अर्थ-संक्रान्ति के दिन, दोनों (कृष्ण व शुक्ल)पक्षों के अंतिम दिनों में, द्वादशी, श्राद्ध के दिन सायं संध्या नहीं करनी चाहिये क्योंकि करने से पितृवध का पाप लगता है।

संध्या समय में न करने योग्य कर्मों को भी शास्त्र में बताया है, यथा-

स्वप्नमध्ययनं स्नानमुद्यर्त्तं भोजनं गतिम् ।  
उभयोः संध्ययोर्नित्यं मध्याह्ने चैव वर्जयेत् ॥

अर्थ-नींद, पढ़ना, स्नान, उबटन, भोजन और चलना इन कार्यों को दोनों संध्याकाल (प्रातः और सायं) और मध्याह्न समय में नहीं करना चाहिए।

शातातप ऋषि संध्या करने का फल इसप्रकार बताते हैं:-

अनृतं मद्यगन्धं च दिवा मैथुनमेव च । पुनाति वृषलस्यान्नं बहिः संध्या ह्युपासिता ॥  
गृहेषु प्राकृती संध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता । नदीषु शतसाहस्री ह्यनन्ता शिवसंनिधौ ॥

अर्थ - झूठ बोलना, मद्य का गंध, दिन में मैथुन करना और शूद्रान् इन पापों का ग्राम के बाहर संध्योपासन करने से नाश होता है। संध्या घर में एकगुनी, गोष्ठ में सौगुनी, नदी में लाखगुनी और शिवजी के समीप में अनन्त-गुनी होती है।

पृज्यपाद कृष्णद्वैपायन व्यास ने संध्या का फल इस प्रकार कहा है-

गृहे त्वेकगुणा संध्या गोष्ठे दशगुणा स्मृता । शतसाहस्रिका नद्यामनन्ता विष्णुसंनिधौ ॥  
बहिः संध्या दशगुणी गर्तप्रसूवणेषु च । खाते तीर्थे शतगुणा ह्यनन्ता जाह्नवीजले ॥

अर्थ - संध्या घर में एक गुनी, गोष्ठ में दशगुनी, नदी में लाखगुनी और विष्णु के समीप अनन्त गुनी होती है। ग्राम से बाहर दश गुनी, गड़ा, झरना, तालाब, तीर्थ में सौ गुनी और गंगाजल से अनन्तगुनी होती है।

संध्या के न करने से पाप लगता है और करने से पुण्य होता है अतः ऐसा कर्म न करना बड़ी भारी भूल है।

संध्या का आदर न करने से जो ब्राह्मणों की वर्तमान काल में दशा है सो लिखने की आवश्यकता नहीं, वे स्वयं जानते हैं। अतः प्रत्येक ब्राह्मण का कर्तव्य है कि वह आलस्य व प्रमाद को छोड़ प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं को करता रहे। यदि तीन सन्ध्या न कर सके तो प्रातः तथा सायं ये दो सन्ध्या तो अवश्य करे नहीं तो वह ब्राह्मण कहलाने के योग्य नहीं रहता।

संध्या वन्दन से तीनों पापों की शुद्धि - कायिक (शरीरसे), वाचिक (वाणीसे) तथा मानसिक (मनसे) - ये तीन प्रकारके पाप होते हैं। धर्मराज यम कहते हैं कि ये तीनों पाप श्रद्धापूर्वक त्रिकाल-संध्यावन्दन एवं गायत्री-उपासना से नष्ट हो जाते हैं। अतः इस त्रिविधि पाप की शुद्धि के लिये त्रिकाल-संध्या करनी चाहिये -

**मानसं वाचिकं चैव कायिकं पातकं स्मृतम्।  
तस्मात् पापाद्विशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं दिने दिने ॥  
त्रिविधं पापशुद्ध्यर्थं संध्योपासनमेव च।**